शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं की ''स्वच्छ भारत मिशन'' अभियान में भूमिका व जागरूकता में उनके योगदान का एक अध्ययन

प्रोफे. डॉ. प्रताप सिंह राणा
शोध निर्देशक
भगवंत विश्वविद्यालय
अजमेर, राजस्थान।

अशोक कुमार
शोधार्थी
भगवंत विश्वविद्यालय
अजमेर, राजस्थान।

सारांशिका

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश राज्य के मेरठ शहर के शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं की ''स्वच्छ भारत मिशन''अभियान में भूमिका एवं जागरूकता में उनके योगदान एक अध्ययन हेतु प्रयास किया गया है। न्यादर्श के रूप में शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान में से प्रशिक्षणरत् कुल 240 प्रशिक्षुओं जिसमें 120 पुरुष प्रशिक्षुओं एवं 120 महिला प्रशिक्षुओं को चुना गया है। अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि एवं उपकरण हेतु पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं भूमिका के लिए एक स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु समांतर माध्य मानक विचलन टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है। शोध विश्लेषण के पश्चात् यह पाया गया कि, शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षुओं की स्वच्छ भारत मिशन अभियान की भागीदारी में कोई सार्थक अंतर नहीं है, साथ ही साथ स्वच्छ भारत मिशन अभियान का पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रति जागरूकता में पुरुष एवं महिला प्रशिक्षुओं में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

कुंजी शब्दः शिक्षणप्रशिक्षण संस्थान, प्रशिक्षु, स्वच्छ भारत मिशन, पर्यावरण, जागरूकता

प्रस्तावना

यह सर्वमान्य सत्य है कि, स्वस्थ पर्यावरण ही मानव जीवन है। किसी राष्ट्र की प्रगति उसके अध्यापकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। पर्यावरण शिक्षा भी आधुनिक शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग है। शिक्षक विद्यार्थियों के लिए आदर्श होता है। शिक्षक विद्यार्थियों को मौखिक शब्दों द्वारा ही शिक्षा नहीं देता वरन उसकी रुचि आचार विचार रहन सहन और व्यक्ति का भी उन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अध्यापक के स्वास्थ्य तथा स्वच्छता के प्रति जागरूकता एवं सकारात्मकदृष्टिकोण का भी विद्यार्थियों पर अधिक गहरा प्रभाव पड़ता है। किसी विशेष कार्य व्यवसाय के प्रभावी कार्य के लिए प्रशिक्षण तथा स्वच्छता का विशेष महत्त्व होता है। प्रशिक्षण किसी दिए गए कार्य को उचित ढंग से संपादित करने के लिए किसी व्यक्ति विशेष को वृत्ति ज्ञान कौशल एवं व्यवहार का क्रमबद्ध विकास है। कहा जाता है कि, शिक्षक जन्मजात होते है परंतु उन्हें विकसित करने के लिए समुचित वातावरण एवं परिस्थितियां देना आवश्यक होता है। जिससे वे प्रभावशाली शिक्षक बन सके एक शिक्षक को प्रभावशाली शिक्षक बनाने के लिए उसकी क्षमताओं और योग्यताओं की जानकारी एवं विकास भी आवश्यक होता है। इस प्रकार एक शिक्षक के निर्माण में वातावरण का भी महत्वपूर्ण योगदान स्थान होता है। मनुष्य की सामाजिक मानसिक भौतिक एवं बौद्धिक कल्याण के लिये भारत के सभी नागरिको को स्वच्छता का एहसास होना बेहद आवश्यक है। ये सही मायनों में भारत की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिए जो हर तरफ स्वच्छता लाने से शुरू किया जा सकता है। जब तक अपने उद्देश्य की प्राप्ति नहीं होती है तब तक इस मिशन की कार्यवाही चलती रहनी चाहिए। मनुष्य की सामाजिक मानसिक भौतिक एवं बौद्धिक कल्याण के लिये भारत के सभी नागरिको को स्वच्छता का एहसास होना बेहद आवश्यक है। ये सही मायनों में भारत की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिए जो हर तरफ स्वच्छता लाने से शुरू किया जा सकता है। जब तक अपने उद्देश्य की प्राप्ति नहीं होती है, तब तक इस मिशन की कार्यवाही चलती रहनी चाहिए ।

बदलते हुए आधुनिक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में मनुष्य के क्रियाकलाप पर्यावरण में असंतुलन पैदा कर रहे हैं। जनसंख्या वृद्धि के दुष्प्रभाव प्राकृतिक संसाधनों के दुरुपयोग मानव के अदूरदर्शिता पूर्ण कार्य एवं व्यवहार से जलवायु, भूमि आदि का दोहन पर्यावरण को असंतुलित कर रहा है। जिससे विभिन्न प्रकार के दुष्परिणाम प्रदूषणों के रूप में सामने आए हैं। जिससे मानव का अस्तित्व खतरे में पड़ता जा रहा है। ऐसी संकट स्थिति में मानक का पर्यावरण के प्रति जागरूक होना आवश्यक है, इस प्रकार यह अध्ययन उस दशा में एक विनम्र प्रयास है।

अध्ययन की आवश्यकता

शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों ने स्वच्छ भारत मिशन की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। क्योंकि शिक्षक समाज के मार्गदर्शक होते हैं और वे ही आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छता एवं स्वस्थ जीवन शैली के बारे में जागरूक कर सकते हैं। शिक्षक जब स्वयं स्वच्छता को अपनाते हैं और इसका प्रशिक्षण पहले तो स्वयं प्राप्त करते हैं और वे अपने विद्यार्थियों को भी स्वच्छता की आदत सिखाते हैं। जिससे बच्चों और युवाओं में स्वच्छता की संस्कृति विकसित होती है। जब शिक्षक अपने विद्यालयों में शौचालयों कक्षाओं और स्कूल प्रांगण की सफाई सुनिश्चित करते हैं, तो बच्चे भी उनका पूरी तरह से सहयोग देते हैं। इससे बच्चों को एक स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण मिलता है। प्रशिक्षु जब व्यक्तिगत एवं सामूहिक स्वच्छता हाथ धोने के सही तरीके कूड़ा कचरा प्रबंधन जल प्रबंधन और खुले में शौच जैसी समस्याओं से बचाव के उपाय सीखते हैं एवं अपने छात्रों को सिखाते हैं। क्योंकि शिक्षक समाज के आदर्श होते हैं। यदि वे स्वच्छता को प्राथमिकता देंगे तो उनके विद्यार्थी और आसपास के लोग भी इससे प्रेरित होंगे और स्वच्छता को अपनाएंगे स्वच्छता को केवल एक विषय के रूप में ही नहीं बल्कि इसे व्यवहार के रूप में सिखाया जाना चाहिए। इससे शिक्षक अपने विद्यालयों में स्वच्छता अभियान का आयोजन कर सकेंगे जिससे छात्रों में जागरूकता बढ़ेगी। इसके लिए वे नुक्कड़ नाटक, पोस्टर मेकिंग, वर्कशॉप, सेमिनार इत्यादि का आयोजन कर सकते हैं। जिससे स्वच्छता अभियान को लागू करने के लिए शिक्षकों को स्कूल और समाज में स्वच्छता अभियान चलाने की प्रेरणा मिलेगी जिससे छात्रावास और स्थानीय समुदाय आपस में मिलकर इस मिशन में शामिल हो सकेंगे ये प्रशिक्ष न केवल स्कूल वर्ग पूरे समाज में स्वच्छता की अलख जगा सकते हैं। अपितु भारत को स्वच्छ और सवस्थ राष्ट्र बनाने में योगदान दे सकते हैं।

शोध शीर्षक में प्रयुक्त शब्दावली की कार्यकारी परिभाषा

शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान–शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थान या महाविद्यालय वे संस्थान हैं, जहाँ भावी शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

प्रशिक्षु – वे छात्र तथा छात्राएं जो शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में बी0 एड0 का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

स्वच्छ भारत अभियान–वर्तमान भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 2 अक्टूबर 2014 को महात्मा गाँधी जी के स्वच्छ भारत के सपने को पूरा करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि एक भारतीय नागरिक होने की खातिर ये हमारी सामाजिक एवं नैतिक जिम्मेदारी है कि, हम वर्ष 2019 में महात्मा गाँधी की 150 वीं जयंती मनाए जाने तक उनके स्वच्छ भारत के सपने को पूरा करेंगे। जिसका मुख्य उद्देश्य स्वच्छता की स्थिति में सुधार करना और खुले में शौच को समाप्त करना है।

जागरूकता–पर्यावरण विषय के प्रति ज्ञान और समझ विकसित करना ही पर्यावरण जागरूकता कहलाती है।

अध्ययन के उद्देश्य

वर्तमान अध्यापन के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं–

- शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में पुरुष प्रशिक्षुओं एवं महिला प्रशिक्षुओं का स्वच्छ भारत मिशन अभियान में भागीदारी का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- शिक्षण शिक्षण संस्थानों के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षुओं का स्वच्छ भारत मिशन अभियान का पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

इस अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित परिकल्पनाएँ तैयार की गई हैं–

- शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों के पुरुष प्रशिक्षुओं एवं महिला प्रशिक्षुओं का स्वच्छ भारत मिशन अभियान की भूमिका में सार्थक अंतर नहीं है।
- शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों के पुरुष प्रशिक्षुओं एवं महिला प्रशिक्षुओं का स्वच्छ भारत अभियान का पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अभिकल्प

प्रयुक्त अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि एवं उपकरण हेतु पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं भूमिका के लिए एक स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु समांतर माध्य मानक विचलन टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है।प्रस्तुत् लघु शोध प्रबंधन के संपादन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

मेरठ शहर के शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं को प्रस्तुत् अध्ययन के लिए जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंधन के लिये शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् 120 पुरुष प्रशिक्षुओं एवं 120 महिला प्रशिक्षुओं का चयन सोद्देश्य न्यादर्श विधि से किया गया है। इस प्रकार कुल 240 पुरुष एवं महिला प्रशिक्षुओं का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

प्रयुक्त अनुसंधान में शिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् पुरुष एवं महिला प्रशिक्षुओं के स्वच्छभारत मिशन अभियान में भूमिका एवं जागरूकता हेतु स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकी

अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रयुक्त शोध की प्रकृति के अनुसार प्रदत्तों का समांतर माध्य मानक विचलन तथा टी मान सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रथम परिकल्पना

शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों के पुरुष प्रशिक्षुओं एवं महिला प्रशिक्षुओं का स्वच्छ भारत मिशन अभियान की भूमिका में सार्थक अंतर नहीं है।

क्रम संख्या	समूह का नाम	समूह संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	't' मान
1.	पुरुष	120	79	7.36	2.88
2.	महिला	120	79	6.42	

तालिका–1

उपर्युक्त तालिका–1 के अध्ययन से ज्ञात होता है प्रशिक्षुओं कि, प्रशिक्षण संस्थानों में के स्वच्छ भारत मिशन अभियान का पर्यावरण पर प्रशिक्षुओं की भूमिका के प्रति पुरुष प्रशिक्षुओं के प्राप्तांकों का मध्यमान 79 एवं महिला प्रशिक्षकों की प्राप्तांकों का माध्यमान 76 है। इन दोनों समूहों के मध्य का गणनात्मक मान 2.88 है तथा डीएफ 238 पर टीका तालिका मान 0.05 पर 1.76 तथा 0.01 पर 2.58 है। अतः टी का गणनात्मक मान सार्थकता के किसी भी स्तर पर सार्थक है। अतः हमारी शून्य परिकल्पना निरस्त होती है। दोनों समूहों के मध्य 0.05 व 0.01 पर सार्थक अंतर है। इस प्रकार पुरुष प्रशिक्षुओं तथा महिला प्रशिक्षुओं कास्वच्छ भारत मिशन अभियान की भूमिका में सार्थक अंतर है। अतः शोध से यह जानकारी प्राप्त हुई कि पुरुष प्रशिक्षु महिला प्रशिक्षुओं की अपेक्षा स्वच्छ भारत मिशन अभियान में अधिक भूमिका रखते हैं।

द्वितीय परिकल्पना

शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों के पुरुष प्रशिक्षुओं एवं महिला प्रशिक्षुओं का स्वच्छ भारत अभियान का पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

क्रम संख्या	समूह का नाम	समूह संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	't' मान
1.	पुरुष	120	76	7.22	3.19
2.	महिला	120	76	6.35	

तालिका–2

उपर्युक्त तालिका–2 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि, प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षुओं के स्वच्छ भारत मिशन अभियान का पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रति जागरूकता के लिए पुरुष प्रशिक्षुओं के प्राप्तांकों का मध्यमान 76 एवं महिला प्रशिक्षकों की प्राप्तांकों का माध्यमान 75 है। इन दोनों समूहों के मध्य टी का गणनात्मक मान 3.19 है तथा डीएफ 238 पर टी का तालिका मान 0.05 पर 1.76 तथा 0.01 पर 2.58 है। अतः टी का गणनात्मक मान सार्थकता के किसी भी स्तर पर सार्थक है। अतः हमारी शून्य परिकल्पना निरस्त होती है। दोनों समूहों के मध्य 0.05 व 0.01 पर सार्थक अंतर है। इस प्रकार पुरुष प्रशिक्षुओं तथा महिला प्रशिक्षुओं का भारत मिशन अभियान का पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर है। अतः शोध से यहजानकारी प्राप्त हुई कि पुरुष प्रशिक्षु महिला प्रशिक्षुओं की अपेक्षा स्वच्छ भारत मिशन अभियान में पर्यावरण पर्व पड़ने वाले प्रभाव के प्रति अधिक जागरूक है।

अध्ययन के निष्कर्ष अध्ययन के उपरान्त यह निष्कर्ष निकला है कि–

- पुरुष प्रशिक्षुओं तथा महिला प्रशिक्षुओं का स्वच्छ भारत मिशन अभियान की भूमिका में दोनों स्तरों 0.05 एवं 0.01 पर सार्थक अंतर है।
- पुरुष प्रशिक्षुओं तथा महिला प्रशिक्षुओं का स्वच्छ भारत मिशन अभियान का पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रति जागरूकता में दोनों स्तरों 0.05 एवं 0.01 पर सार्थक अंतर है।

अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ–

शिक्षण संस्थानों में स्वच्छता संबंधी प्रायोगिक गतिविधियों परियोजनाओं आधारित शिक्षण और सामुदायिक सहभागिता द्वारा पर्यावरण शिक्षा को और अधिक प्रभावी बनाना चाहिए। पशु–पक्षियों को स्वयं स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण का पालन करना चाहिए। जिससे वे छात्रों और जनसमुदाय के लिए प्रेरणा स्रोत बन सकेंगे भूमिका का मतलब केवल जानना नहीं बल्कि स्वच्छता से जुड़े कार्यों में सक्रिय भागीदारी करना है। इसमें स्वच्छता अभियान में भाग लेना सफाई करना दूसरों को प्रेरित करना और जिम्मेदारी से निभाना सामिल है। यदि कोई प्रशिक्षुकों स्वयं पर तरह की सफाई करता है और प्लास्टिक का कम उपयोग करता है और दूसरों को प्रभावित करता है एवं उसकी सोच और मानसिकता को भी प्रभावित करता है। कोई व्यक्ति स्वच्छता के महत्त्व को जान सकता है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि, वह इसमें सक्रिय रूप से भागीदारी ले रहा है। अतः वास्तविक सफाई और पर्यावरण पर सकारात्मक असर डालता है। कोई व्यक्ति कोई व्यक्ति जानता है कि, प्लास्टिक कचरा नुकसानदायक है। अतः प्लास्टिक का उपयोग कम करता है एवं दूसरों को भी प्रेरित करता है बिना जागरूकता के सही दिशा में कार्य नहीं किया जा सकता है।शिक्षण संस्थानों में डिजिटल माध्यम, नुक्कड़ नाटक, पोस्टर, फिल्म, डॉक्यूमेन्ट्री इत्यादि अभियानों का संचालन करके पर्यावरण एवं स्वच्छता से जुड़ी जागरूकता फैला सकते हैं।

यदि प्रशिक्षु स्वच्छता और पर्यावरण जागरूकता को अपनी शिक्षण पद्धति में शामिल करेंगे तो आने वाली पीढ़ी को एक स्वच्छ और स्वस्थ भविष्य प्रदान करेंगे। अतः शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षु शिक्षक स्वच्छ भारत मिशनअभियान को सफल बनाने और पर्यावरण संरक्षण के प्रति समाज को जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। यदि विद्यालयों और समुदायों में स्वच्छता एवं पर्यावरण जागरूकता से जुड़े कार्यों को प्राथमिकता देंगे तो यह समाज में स्थायी परिवर्तन ला सकते हैं। इसके लिए शिक्षण पद्धति में उचित बदलाव व्यावहारिक गतिविधियों का समावेश एवं समुदाय के साथ सहभागिता आवश्यक है इस प्रकार प्रशिक्षु स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण को प्रभावी रूप से बढ़ावा दे सकते हैं।

सन्दर्भ सूची :

- पुस्तकें एवं शोध पत्र पत्रिकाएँ
- सिंह अरुण कुमार उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान
- सिंह अरुण कुमार मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षण में शोध विधि
- डॉक्टर मुखर्जी श्यामा प्रसाद रिसर्च फाउंडेशन नई दिल्ली
- स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय एक पुस्तिका मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार
- गाँधीजी का आदर्श मोदीजी का संकल्प साप्ताहिक समाचार पत्र
- स्वच्छ भारत सर्वेक्षण 2018
- जर्नल्स
- समाचार पत्र पत्रिकाएं
- इंटरनेट
- सोशल प्लेटफॉर्म।